Notes By Akhilesh Kumar
J K college Biraul Darbhanga
YouTube :A commerce Education

Notes BY: AKHILESH KUMAR(Guest Teacher)

DEPARTMENT OF COMMERCE

JANTA KOSHI COLLEGE BIRAUL, DARBHANGA

For – LNMU B. Com part -1 ,Subsidiary PAPER -I Business Economics and Environment

Lecture -3 Unit- 2 ,3 and 4 Demand production function , & Market structure

Easy to Understand the concept

- ***मांग की आड़ी लोच के प्रकार (KINDS OF CROSS ELASTICITY OF DEMAND)***

(1) पूरक वस्तुओ की मांग की आड़ी लोच - *पूरक वस्तुओ की मांग की आड़ी लोच सदैव नकारात्मक होती है क्योंकि इनकी मांग संयुक्त रूप से की जाती है जैसी कर तथा पेट्रोल | अत: पेट्रोल की कोमल में वृधि के परिणामस्वरूप न केवल पेट्रोल की मांग कम होगी बल्कि कार की मांग में भी कमी आएगी |*

(2) स्थानापन्न वस्तुओ की मांग की आड़ी लोच - *स्थानापन्न वस्तुओ की मांग की आड़ी लोच सदैव धनात्मक होती है उदाहरण के लिए जब चाय (Y-वस्तु) की कीमत बढ़ जाये परन्तु काफ़ी (X – वस्तु) की कीमत पुरवत ही रहती है तो उपभोक्ता चाय के स्थान पर काफी की मांग अधिक करेगे | कहने का अभिप्राय यह है की स्थानापन्न वस्तुओ की स्थिति में एक वस्तु की कीमत में जिस दिशा में परिवर्तन होगा दूसरी वस्तु की मांग में भी उसी दिशा में परिवर्तन होगा |*

(3) असंबंधित वस्तुओ की मांग की आड़ी लोच - *परस्पर असंबंधित वस्तुओ की दशा में मांग की आड़ी लोच शून्य होती है |*

निष्कर्ष - यदि मांग की आड़ी लोच धनात्मक है तो यह मानेंगे की दोनों वस्तुए एक दूसरे की स्थानापन्न है | इसके विपरीत ऋणात्मक होने पर

दोनों वस्तुओ को पूरक माना जाता है | यदि मांग की आड़ी लोच शून्य हो तो इसका अर्थ है कि दोनों वस्तुए आपस में सम्बंधित नही है |

✓ *उत्पादन फलन (PRODUCTION FUNCTION) :*

उत्पादन फलन में फलन शब्द गणित से लिया गया है | यह दो विभिन्न चरो के सम्बन्ध को व्यक्त करता है | उदाहरण के लिए जब हम यह कहते है की 'Y'-चर , X-चर पर निर्भर करता है अर्थात यदि X-चर में कोई परिवर्तन होता है तो उसका प्रभाव Y-चर पर भी पड़ेगा | गणितीय रूप में इस सम्बन्ध को निम्न प्रकार व्यक्त किया जाता है -

$Y=F(X)$

जिस वस्तु का उत्पादन किया जा रहा है उसे अर्थशास्त्र में निर्गत कहते है एंव जिन साधनों की सहायता से उत्पादन किया जाता है उन्हें आगत कहा जाता है | वस्तुत: आगम में उन सभी वस्तुओ को सम्मिलित किया जाता है जिन्हें किसी फर्म द्वारा उत्पादन क्रिया में प्रयोग किया गया है | इसके विपरीत निर्गत शब्द उन सभी वस्तुओ की मात्राओं की और संकेत करता है जिन्हें विभिन्न आगम की सहायता से फर्म द्वारा उत्पादित किया जाता है |

✓ *उत्पादन फलन की मान्यताये (assumptions of production function) :-*

(i) उत्पादन फलां एक निश्चित समयावधि से सम्बन्धी होता है |
(ii) जिस समयावधि में उत्पादन फलन का अध्ययन किया जाता है उसके लिए यह मन लिया जाता है की तकनीकी ज्ञान की स्थिति में कोई परिवर्तन नही होगा |

(iii) फर्म सर्वश्रेष्ठ एंव आधुनिकतम उत्पादन तकनीकी का प्रयोग करती है /

(iv) उत्पादन के विभिन्न साधन छोटी-छोटी इकाइयों में विभाजित होते है /

(v) उत्पादन के साधनों की कीमतें यथा स्थिर रहती है अर्थात उत्पादन के साधनों की कीमत में कोई परिवर्तन नही होता है /

- ✓ *उत्पादन फलन के प्रकार (TYPE OF PRODUCTION FUNCTION)*

उत्पादन फलन में समय -तत्व एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है / उत्पादन फलन की प्रक्रति अल्पकाल एंव दीर्घकालिक में एक समान नही रहती है /

अल्पकालीन उत्पादन अवधि का अभिप्राय उस समयावधि से है जिसमे उत्पत्ति के सभी साधनों को परिवर्तित नही किया जा सकता है

इसके विपरीत दीर्घकालीन उत्पादन अवधि का अभिप्राय: ऐसी दीर्घ समयवधि से है जिसमे फर्म उत्पादन में प्रयोग होने वाले उत्पति के सभी साधनों को आवश्यकतानुसार परिवर्तित कर सकती है

इस प्रकार उत्पादन फलन को निम्नलिखित दो भागो में बांटा जा सकता है /

(i) अल्पकालीन उत्पादन फलन - जब उत्पादन के साधन स्थिर रहते है और एक साधन में परिवर्तन किया जा सकता है तो इसे अल्पकालीन

उत्पादन फलन खा जाता है इस स्थिति को उत्पति हास्य नियम अथवा परिवर्तनशील अनुपातों का नियम भी कहा जाता है |

(ii) दीर्घकालीन उत्पादन फलन - जब उत्पादन के सभी साधन परिवर्तनशील हो तो उसे दीर्घकालीन उत्पादन फलन कहा जाता है | इस स्थिति को पैमाने के प्रतिफल के नियम के नाम से भी व्यक्त किया जाता है |

- ✓ *रिज रेखाएँ(RIDGE LINES)*

स्मोत्पाद वक्र के बिन्दुओं के मार्ग जिन पर साधनों को सीमांत उत्पादकता शून्य होती है , रिज रेखाएँ बनाते है |

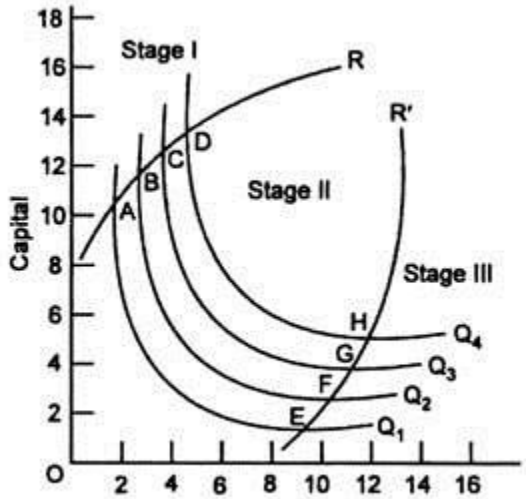

Fig. 14 : Ridge Lines

उपयुक्त वर्णित स्मोत्पाद मानचित्र में दो रिज रेखाएँ OR तथा OS है | रिज रेखा OR श्रम की उन मात्राओं को व्यक्त करती है जो उत्पादन की

विभिन्न मात्राओं के लिये न्यूनतम रूप से आवश्यक है तथा रिज रेखा OS पूंजी की न्यूनतम आवश्यक मात्राओ को व्यक्त करती है और रेखा को पूंजी रिज रेखा अथवा उपरी रिज रेखा भी कहा जाता है | रिज रेखा OR के विभिन्न बिन्दुओ जैसे A, B, C तथा D पर पूंजी की सीमांत उत्पादकता शून्य होती है इसी प्रकार OS रेखा को श्रम रिज रेखा अथवा निम्न रिज रेखा भी कहा जाता है | इस रेखा के विभिन्न बिन्दुओ जैसे E, F, G तथा H पर श्रम को सीमांत उत्पादकता शून्य होती है इन दोनों रिज रेखाओं OR तथा OS के बिच के क्षेत्र को उत्पादन के आर्थिक क्षेत्र को संज्ञा दी जा सकती है | उत्पादन के इस क्षेत्र में स्मोत्पाद के इस क्षेत्र में स्मोत्पाद वक्र सामान्य आकार वाले अर्थात ऋणात्मक ढाल वाले होते है | इन परिधि रेखाओं के क्षेत्र में उत्पादन करके ही उत्पादक अपने लाभों को अधिकतम कर सकते है

✓ *पैमाने के प्रतिफल का अर्थ एंव परिभाषा (MEANING AND DEFINITION OF RETURN TO SCALE)*

पैमाने के प्रतिफल से अभिप्राय उत्पादन में होने वाले उस परिवर्तन से है जो उत्पादन के सभी साधनों में सामान अनुपात में परिवर्तन करने के परिणामस्वरूप उत्पन्न होता है उत्पादन के सभी साधनों में परिवर्तन केवल दीर्घकाल में ही सम्भव होता है ,अत: पैमाने के प्रतिफल का सम्बन्ध दीर्घकालीन उत्पादन फलन से होता है

प्रो० लिभाफ्सकी के अनुसार , “ पैमाने के प्रतिफल का सम्बन्ध सभी साधनों में होने वाले परिवर्तनों के फलस्वरूप कुल उत्पादन में होने वाले परिवर्तन से है यह एक दीर्घकालीन धारणा है “

पैमाने की बचते

ऐसी बचते जो की किसी फर्म को उसके उत्पादन के आकर में वृधि के कारन अथवा उस उद्योग विशेष में फर्मो की संख्या बढ़ जाने के कारन प्राप्त होती है , उन्हें पैमाने की बचते कहते है |

✓ *बड़े पैमाने का उत्पादन LARGE SCALE PRODUCTION*

जब किसी उद्योग में उत्पादन इकाइयाँ बड़े आकर की होती है तथा वह उत्पादन के विभिन्न साधनों जैसे - पूंजी, श्रम , आदि का बड़ी मात्रा में प्रयोग करती है तो इसे बड़े पैमाने का उत्पादन कहते है | बड़े पैमाने के उत्पादन में निम्नलिखित चार बाते अनिवार्य रूप से पाई जाती है -

(i) *कारखानों में कम करने वाले श्रमिकों की संख्या का अधिक होना |*

(ii) *पूंजी का बड़ी मात्रा में लगाया जाना |*

(iii) *अधिकांश उत्पादन कार्य मशीनों की सहायता से करना |*

(iv) उत्पादन को बड़े पैमाने में प्राप्त किया जाना |

- ✓ *आंतरिक एंव बाह्य मितव्ययीताएँ(INTERNAL AND EXTERNAL ECONOMIES)*

आंतरिक बचतें(INTERNAL ECONOMIES OF SCALE)

जब एक फर्म को उत्पत्ति का पैमाना बढाने पर अपनी आंतरिक कुशलता तथा संगठन की श्रेष्ठता के कारण बचते प्राप्त होती है तो उन्हें आंतरिक बचते कहते है | इन बचतों का सम्बन्ध सम्पूर्ण उद्योग से नही होता है बल्कि किसी फर्म विशेष से होता है | फलत: ये बचते प्रत्येक तथा व्यवस्था आदि को श्रेष्ठता के कारण होती है |

बाह्य मितव्ययीताएँ (बाह्य बचते)

किसी फर्म की लागत केवल उसकी उत्पादन मात्रा पर ही निर्भर न होकर सम्पूर्ण उद्योग की उत्पादन मात्र के स्तर पर निर्भर करती है | बाह्य मितव्ययीताएँ वे है जो विभिन्न फर्मो को सम्पूर्ण उद्योग के विस्तार के कारन उपलब्ध होती है और ये किसी व्यक्तिगत फर्म के उत्पादन पैमाने के स्तर पर निर्भर नही होती है | दूसरे शब्दों में बाह्य मितव्ययीताएँ वे बचते है जो प्राय: समान रूप से किसी उद्योग की सभी फर्मो को

उपलब्ध होती है / संक्षेप में बाह्य मितव्ययीताएँ की निम्न रूप से प्राप्त होती है /

✓ *बाह्य बचतों के प्रकार (TYPES OF EXTERNAL ECONOMIES)*

1. ***केन्द्रीयकरण की बचते :-*** *किसी स्थान विशेष पर जब बहुत - सी फर्मे केन्द्रित हो जाती है तो उन्हें इस केन्द्रीयकरण के परिणामस्वरूप अनेक लाभ प्राप्त होते है , जैसे कुशल श्रमिकों की प्राप्ति का प्रशिक्षण आसान हो जाता है परिवहन व संचार सुविधाओं के विकास का लाभ मिलता है कच्चा माल व् विधुत शक्ति सुविधा से उपलब्ध हो जाती है वहाँ अनेक वितीय संस्थाएँ खल जाती है जिससे चित दर पर वितीय सहायताएँ उपलब्ध हो जाती है इत्यादि /*
2. ***सुचना एंव सन्देश सम्बन्धी लाभ (Economics of information) :-*** *एक स्थान पर जब एक ही तरह की अनेक फर्मे कार्य करती है तो उनके लिए सयुंक्त रूप से व्यापारिक एंव तकनीकी पत्र पत्रिकाएँ प्रकाशित करना संभव होता है , जिनका लाभ प्रत्येक फर्म को प्राप्त होता है /*
3. ***अनुसन्धान की बचते (Economics of research) :-*** *जब किसी क्षेत्र विशेष में अनेक फर्मे केन्द्रित हो जाती है तो यह संभव है की वे सयुंक्त रूप से एक केन्द्रीय अनुसन्धान संस्था की स्थापना कर ले*

जो उद्योग में कार्य करने वाली फर्मो के लिए नवीं उत्पादन तकनीक की खोज करने में संलग्न रहती है इसकी खोजो का लाभ सभी फर्मो को मिलता है |

4. ***क्रियाओं के विखंडन (वियोजन) की बचते (Economies of Disintegration) :-*** *जब किसी उद्योग का पर्याप्त विकास हो जाता है तब यह संभव होता है की उस उद्योग की कुछ प्रक्रियाओं को तोड़कर उनका सञ्चालन विशिष्ट फर्म अथवा फर्मो द्वारा किया जय तथा वे फर्मे जब उसमें विशिष्टीकरण प्राप्त कर लेती है तो उसकी कुशलता बढती है तथा उनका लाभ सभी फर्मो को प्राप्त होता है |*

✓ ***आंतरिक तथा बाह्य बचतों में सम्बन्ध (Relationship between internal and external Economies)***

आंतरिक बचतों का सम्बन्ध एक फर्म विशेष के आकर तथा संगठन से होता है ये किसी फर्म विशेष को उसके आकर में वृधि तथा संगठन में सुधर के कारण प्राप्त होती है जबकि बाह्य बचते उद्योग के आकर तथा स्थानीयकरण पर निर्भर करती है तथा उद्योग में लगी सभी फर्मो को प्राप्त होती है बाह्य बचते आंतरिक बचतों से भिन्न होती है परन्तु व्यवहार में इन दोनों के मध्य एक स्पष्ट तथा निश्चित रेखा खींचना कठिन होता है क्योंकि एक फर्म के लिए जो आंतरिक बचत होती है वही दूसरी फर्म के लिए बाह्य बचत हो सकती है उदाहरण के लिए एक

पोलिस्टर का धागा बनाने वाली फर्म उत्पादन की मात्र में वर्धि करके आंतरिक बचते प्राप्त कर सकती है इससे पोलिस्टर के धागे के मूल्य में स्वाभाविक कमी होती तथा जो फर्मे पोलिस्टर का सस्ता धागा खरीदेगी उनके लिए यह बाह्य बचत होगी |

बड़े पैमाने की अमितव्ययिताये (Diseconomies of large scale)

यदपि बड़े पैमाने पर उत्पादन करना लाभप्रद होता है परन्तु कोई भी फर्म असीमित रूप से अपने उत्पादन का पैमाना नही बाधा सकती क्योंकि उत्पति के पैमाने को बढ़ाते -बढ़ाते एक ऐसी सीमा भी आ जाती है की यदि पैमाने को उससे अधिक बढाया जाये तो लाभ के बजाय हानि होने लगती है दूसरे शब्दों में यदि किसी फर्म का आकर अनुकूलतम सीमा के बाद भी बढाया जाता है तो उससे बचतों के स्थान पर अमितव्ययिताये होने लगती है |

- ✓ *अल्पकालीन तथा दीर्घकालीन लगते वक्र (Short-run and long-run Cost Curves)*

अल्पकाल का आशय - अल्पकाल से आशय उस समय अवधि से होता है जिसमे उत्पादन की मात्रा में परिवर्तन केवल परिवर्तनशील साधनों की सहायता से ही किया जा सकता है तथा फर्म के स्थिर प्लांट की क्षमता

या आकर में परिवर्तन संभव नही होता है | इसके अंतर्गत उत्पादन के पास इतना समय होता है की वे उत्पादन की मात्र को अपनी उत्पादन क्षमता की सीमा तक कम या अधिक कर सकते है लेकिन उत्पादन क्षमता को परिवर्तन नही कर सकते है | अत: अल्पकाल में स्थिर प्लांट क्षमता के साथ परिवर्तनशील साधनों जैसे - कच्चा माल, श्रम, शक्ति आदि में परिवर्तन करके उत्पादन की मात्रा को बढाया जा सकता है |

दीर्घकाल में लागत उत्पादन मात्रा सम्बन्ध

दीर्घकाल में उत्पादन के सभी साधन परिवर्तनशील होते है इसमें फर्म अपने उत्पादन को किसी भी सीमा तक परिवर्तित कर सकती है उत्पादन को बढ़ने के लिए फर्म अपनी विधमान उत्पादन क्षमता का विस्तार कर सकती है तथा नया संयंत्र भी स्थापित कर

सकती है चूँकि इस कल में सभी लगते परिवर्तनशील होती है अत: दीर्घकाल में केवल औसत लागत तथा सीमांत लागत का ही महत्व रह जाता है दीर्घकालीन लागत वक्र भी अल्पकालीन लागत वक्र की भांति U आकर वाले भी होते है , परन्तु इसकी आक्रति अपेक्षाक्रत चपटी होती है|

दीर्घकालीन औसत लागत वक्र

अल्पकाल में समय कम होने के कारण प्लांट में किसी प्रकार का परिवर्तन नही किया जा सकता जबकि दीर्घकाल में प्लांट में आवश्यकतानुसार परिवर्तन किया जा सकता है दीर्घकाल में एक फर्म अपनी आवश्यकतानुसार अनेक स्तरों पर उत्पादन कर सकती है अत: एक फर्म द्वारा उत्पादन की मात्र में जितनी बार परिवर्तन किया जा सकता है उतनी ही बार उस फर्म एक फर्म के लिए नये अल्पकालीन लागत वक्र प्राप्त होगे |

- ✓ *बाजार, बाजार मूल्य एंव सामान्य मूल्य (Market , market price and normal price)*

सामान्य बोल-चाल की भाषा में बाजार का अर्थ उस स्थान से लगाया जाता है जहाँ वस्तुओ के क्रेता और विक्रेता एक साथ एकत्रित होकर वस्तुओ और सेवाओं का क्रय-विक्रय करते है दुसरे शब्दों में एक ऐसा स्थान, जहाँ वस्तु के क्रेता एंव विक्रेता भौतिक रूप में उपस्थित होकर वस्तुओ का आदान प्रदान करते है बाजार कहलाता है किन्तु अर्थशास्त्र में बाजार से आशय किसी स्थान विशेष से नही बल्कि उस सम्पूर्ण क्षेत्र से होता है जहाँ वस्तु विशेष के क्रेता तथा विक्रेताओ में प्रतिस्पर्धात्मक सम्बन्ध हो तथा सम्पूर्ण क्षेत्र में सामान्यत: वस्तु की एक ही कीमत पाए जाने की परवर्ती रहती है आधुनिक युग में वस्तुओ और सेवाओ का क्रय-विक्रय टेलीफोन अथवा अन्य संचार माध्यमों से भी सम्पन्न किया

जाता है इस प्रकार बाजार का सम्बन्ध किसी स्थान विशेष से होना अनिवार्य नही |

सामान्यतः वस्तु के क्रय विक्रय में क्रेता और विक्रेता के मद्य सौदेबाजी का एक संघर्ष जारी रहता है और वस्तुओ का आदान प्रदान तब तक सम्भव नही हो पता जब तक क्रेता और विक्रेता दोनों एक कीमत स्वीकार करने को तैयार नही हो जाते है |

- ✓ ***बाजार की परिभाषाये (Definitions of market)***

विभिन्न अर्थशास्त्रियो ने बाजार को भिन्न-भिन्न रूप में परिभाषित किया है |

प्रो० जेवन्स के अनुसार *,"बाजार शब्द का इस प्रकार सामान्यीकरण किया गया है की इसका आशय व्यक्तियों के उस समूह से लिया जाता है जिनका परस्पर व्यापारिक घनिष्ठ सम्बन्ध हो और जो वस्तु के बहुत से सौदे करें| "*

प्रो० कुर्नो के अनुसार *,"बाजार शब्द से अर्थशास्त्रियो का तात्पर्य किसी विशेष स्थान से नही होता जहाँ वस्तुओ की खरीदी और बेचीं जाती है बल्कि वह सम्पूर्ण क्षेत्र जिसमे क्रेताओं और विक्रेताओ के बिच स्वतंत्र*

प्रतियोगिता इस प्रकार हो की सामान वस्तुओ की कीमतें सम्पूर्ण क्षेत्र में सामान होने की परवर्ती रखती हो | ”

✓ *बाजार की प्रमुख विशेषताएं (Main Characteristics of market)*

बाजार की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित है :-

i. *एक क्षेत्र (An area)- बाजार का अर्थ किसी स्थान विशेष से नही होता बल्कि उस सम्पूर्ण क्षेत्र से होता है जहाँ वस्तु के क्रेता तथा विक्रेता फैले रहते है |*

ii. *क्रेता तथा विक्रेताओ की उपस्थिति (Presence of Buyers and Sellers) – बाजार के लिए क्रेता तथा विक्रेताओ का होना आवश्यक होता है किसी एक के आभाव में बाजार की कल्पना नही की जा सकती |*

iii. *एक वस्तु (Particular commodity) – अर्थशास्त्र में बाजार का सम्बन्ध सदैव किसी एक वस्तु विशेष से ही होता है अत: प्रत्येक वस्तु के लिए एक पृथक बाजार होता है*

iv. *प्रतियोगिता (Competition) – बाजार में क्रेता तथा विक्रेताओं के बीच स्वतंत्र प्रतियोगिता पी जाती है*